मौजूद रही.

किसानों के लिए लाभकारी है, राई-सरसों की खेती..डॉ महक सिंह

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान, आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39

से 41.8% होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ हृदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40% प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र
दीक्षालय प्रवाह

कानपुर मंगलवार / 15.10.2024
E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

किसानों के लिए लाभकारी है, राई–सरसों की खेती : डॉ0 महक सिंह

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ0 महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ0 सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई–सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान,आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है। डॉ0 महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ0 सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8 प्रतिशत होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ ह्रदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और

घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

किसानों के लिए लाभकारी है राई-सरसों की खेती: डॉ. महक सिंह

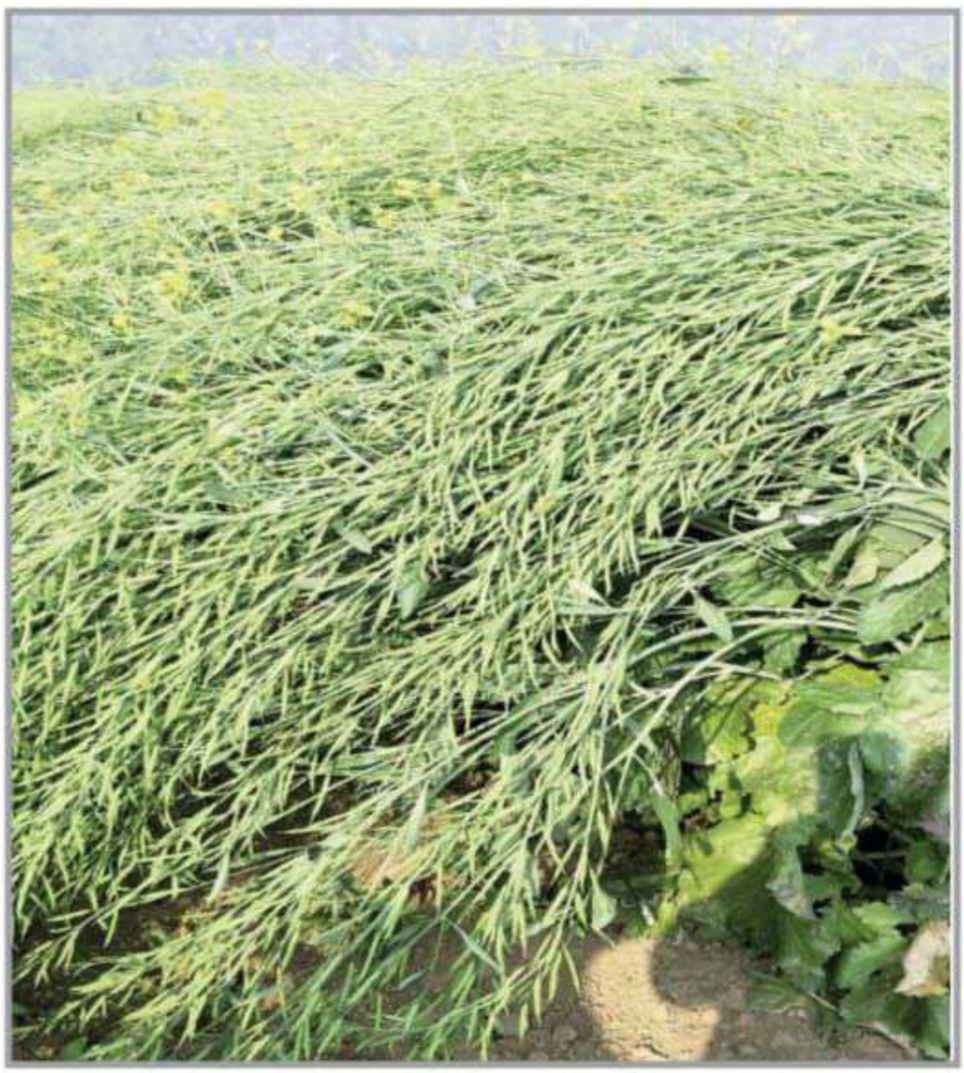

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान,आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8% होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ ह्रदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40% प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • मंगलवार • 15 अक्टूबर • 2024

षकों के लिये लाभकारी है राई-सरसों की खेती : डॉ. महक

हारा न्यूज ब्यूरो
ुर।

ख़र आजाद कृषि एवं ोक विश्वविद्यालय के न अनुभाग के प्रो. एवं ा डॉ. महक सिंह ने वताया ई-सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में ी फसलों का द्वितीय स्थान है।
डॉ. सिंह ने वताया कि वैश्विक स्तर पर । और चीन के वाद भारत तीसरा मुख्य उत्पादक एवं सातवां सरसों के तेल का क देश है। उन्होंने वताया कि उत्तर में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल । 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल न लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है।
वताया कि विश्वविद्यालय द्वारा त सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरु वैभव, रोहिणी, माया, कांति, ,आशीर्वाद एवं वसंती हैं, जवकि पीली सरसों में पीतांवरी प्रमुख प्रजाति है । डॉ. महक सिंह ने वताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने वताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में वुआई के लिये उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि वुआई के लिए अक्टूवर माह का समय उचित रहता है एवं विलंव की दशा में 1 नवंवर से 25 नवंवर उत्तम रहता है डॉ .सिंह ने वताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई-सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही है। उन्होंने वताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ वदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने वताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8 होती है।
उन्होंने वताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है।
सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ हृदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार एवं अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने वताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते है खली में 38 से 40 प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते है जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 16 अंक : 105 कानपुर, मंगलवार 15 अक्टूबर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

किसानों के लिए लाभकारी है राई-सरसों की खेती:डॉ महक

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान,आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8ब होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ ह्रदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40ब प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

डा. महक सिंह

670d672c182cfCITY 4....

किसानों के लिए लाभकारी है, राई-सरसों की खेती

कानपुर, 14 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान,आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है।

ारी

नहीं

री है और
ी घोषित
नपुर की
माना जा
त्र से जुड़े
आयोजन
ो लेकर
ुनाव में

तौर पर
ी ही जुड़े
सीट पर
चुनौती
ायक की
दिया है।
वेदार हैं
किसी को

मॉयो

प्रयो

कानपुर, 14 अक
में दो साप्ताहिक
वर्कशॉप ने केवल
बढ़ाया है, बल्कि
दृष्टिकोण भी प्रदा
अवस्थी ने इस न
प्रोत्साहित किया
लिए प्रेरित किया
निदेशक डा. दि
भविष्य में इस
व्यावसायिक
आयोजन हेतु
उन्होंने कहा कि
प्रशिक्षण स्वास्थ्य
में चुनौतियों का
के सहायक निदेश
में भी ऐसे वर्कशॉ
करते हैं, जिनके
क्षेत्र में उत्कृष्टता
विश्विद्यालय, दे
मॉयोफेशियल रि
निवारण में कैसे

किसानों के लिए लाभकारी है, राई-सरसों की खेती-डॉ महक सिंह

अनवर अशरफ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव,

रोहिणी, माया, कांति, वरदान,आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा बिकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8ब होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ हृदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ट ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40ब प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।

मौसम
अधिकतम तापमान 33.c
27.c न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000kg
सेंसेक्स 81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

04 आकार लेती स्वास्थ्य क्रांति, स्वास्थ्य सेवाओं में सरकार की बढ़ती भूमिका

अनन्या पांडे ने लेटेस्ट फोटोशूट

वर्ष :10 अंक :249 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,मंगलवार 15 अक्टूबर 2024 पृष्ठ : 08

किसानों के लिए लाभकारी है, राई-सरसों की खेती:डॉ महक

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर , सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में तिलहन अनुभाग के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ महक सिंह ने बताया कि राई सरसों महत्वपूर्ण फसल है। उन्होंने बताया की राष्ट्रीय कृषि अर्थव्यवस्था में तिलहनी फसलों का द्वितीय स्थान है। डॉ सिंह ने बताया कि वैश्विक स्तर पर कनाडा और चीन के बाद भारत तीसरा मुख्य सरसों उत्पादक एवं सातवा सरसों के तेल का निर्यातक देश है। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश में राई-सरसों का कुल क्षेत्रफल लगभग 7.53 लाख हेक्टेयर तथा कुल उत्पादन लगभग 11.53 लाख मैट्रिक टन है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सरसों की प्रमुख प्रजातियां जैसे वरुणा, वैभव, रोहिणी, माया, कांति, वरदान, आशीर्वाद एवं बसंती हैं। जबकि पीली सरसों में पीतांबरी प्रमुख प्रजाति है ।डॉ महक सिंह ने बताया की विश्वविद्यालय द्वारा राई की आजाद महक एवं सरसों की आजाद चेतना, गोवर्धन जैसी नवीन प्रजातियों का विकास किया गया है। उन्होंने बताया कि वरुणा तथा वैभव जैसी प्रजातियां अर्ध शुष्क दशा में बुवाई हेतु उत्तम होती हैं। उन्होंने कहा कि बुवाई के लिए अक्टूबर माह का समय उचित रहता है। तथा विलंब की दशा में 1 नवंबर से 25 नवंबर उत्तम रहता हैं। डॉ सिंह ने बताया कि वैसे तो विश्वविद्यालय द्वारा विकसित राई सरसों की प्रजातियां पूरे देश में उगाई जा रही हैं। उन्होंने बताया की वरुणा प्रजाति सिंचित एवं असिंचित दोनों दशाओं के लिए संस्तुति है साथ ही साथ बदलती हुई जलवायु में तापक्रम के प्रति सहिष्णु हैं।अन्य प्रजातियों की तुलना में रोग व्याधियों कम लगती हैं। उन्होंने बताया कि वरुणा प्रजाति का दाना मोटा एवं तेल की मात्रा अधिक 39 से 41.8% होती है। उन्होंने बताया कि सरसों के तेल का मानव स्वास्थ्य को कई प्रकार से लाभ पहुंचाता है उन्होंने कहा सरसों का तेल स्वास्थ टानिक के रूप में, रक्त निर्माण में योगदान, स्वास्थ हृदय, मधुमेह पर नियंत्रण, कैंसर प्रतियोगी, जीवाणु फफूंदी प्रतिरोधी, ठंड और खांसी निवारक, जोड़ों के दर्द और घटिया उपचार तथा अस्थमा निवारक के रूप में प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया की सरसों से निकलने वाले आवशिष्ठ ठोस पदार्थ को खली कहते हैं खली में 38 से 40% प्रोटीन पाया जाता है जो कि पशु आहार में प्रयोग करते हैं जिससे कि पशुओं को लाभ होता है।